कुमार-बिमल के साहसिक कारनामे

यक्ष का खजाना

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW

यक्ष का खजाना

'कुमार-बिमल' शृंखला की बँगला साहसिक कहानी
'जकेर धन' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

जगप्रभा

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit
Image by liuzishan on Freepik

Storyline illustrations are copied from the original Bengali book.

-: eBook :-

YAKSHA KA KHAJANA
(Treasure of the Demigod)
Hindi translation of the Bengali adventure story 'Jaker Dhan' from the 'Kumar-Bimal' series.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: Translator
Published by:
JAGPRABHA
Barharwa (SBG), JH- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 125.00

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

यक्ष का खजाना 6
नरमुण्ड 6
यक्ष का खजाना 9
संकेतों का अर्थ 12
सत्यानाश! 17
परामर्श 21
चोर पर मोर 24
खिड़की पर काला चेहरा 28
बिल्ली के भाग से छींका टूटा 31
नयी आफत 34
यह कौन-सा चोर? 37
छातक 42
बिना बादल की बिजली 45
खासिया पहाड़ में 49
मानव, न पिशाच? 53
दो दहकती आँखें 56
पिशाच रहस्य 58
मौत के मुँह में 61
अद्भुत कारनामा 65
पेड़ की ओट से 70
रास्ते की बाधा 73
बाधा पर बाधा 77
अलौकिक काण्ड 79
खजाने का कमरा 84
अदृश्य विपत्ति 88
भूत, जन्तु या मानव? 90
कराली की एक और करतूत 94
भयानक कुआँ 99
परिणाम 103
टिप्पणियाँ 106

यक्ष का खजाना

नरमुण्ड

दादाजी के देहान्त के बाद उनके लोहे के सन्दूक में अन्यान्य चीजों के साथ एक छोटा बक्सा भी मिला। उस बक्से में जरूर कोई कीमती चीज होगी- सोचकर माँ ने उसे खोला, लेकिन उसमें थी एक पुरानी पॉकेट-बुक और पुराने कागज में लिपटी हुई कोई चीज। माँ कागज को खोलते ही उस चीज को दूर फेंककर जोर-जोर से चिल्लाने लगीं।

मैं भागा आया, "क्या हुआ, क्या हुआ माँ?"

माँ ने थर-थर काँपते हुए जमीन पर पड़ी उस चीज की ओर ईशारा करते हुए कहा, "कुमार, जल्दी से इसे फेंक आओ!"

मैंने झुककर देखा, एक नरमुण्ड पड़ा हुआ था जमीन पर! मैंने आश्चर्य के साथ कहा, "लोहे के सन्दूक में कंकाल की खोपड़ी! दादाजी बुढ़ापे में पागल हो गये थे क्या?"

माँ ने कहा, "इसे जल्दी से फेंककर आओ, मैं गंगाजल छिड़कती हूँ!"

मैंने खोपड़ी को खिड़की से घर की नाली में फेंक दिया। पॉकेट-बुक को उठाकर ताख पर रख दिया। माँ ने बक्से को फिर से सन्दूक में रख दिया।

कुछ दिनों बाद पड़ोसी कराली मुखर्जी का अचानक हमारे घर में आगमन हुआ। उन्हें हमारे घर में देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने सुन रखा था कि दादाजी के साथ उनकी बनती नहीं थी। दादाजी के रहते मैंने उनको कभी हमारे घर में आते हुए नहीं देखा था।

करालीबाबू बोले, "कुमार, तुम्हारे सिर पर अब किसी अभिभावक का हाथ नहीं रहा। तुम अभी नाबालिग हो। कितना भी तो तुम हमारे मुहल्ले के लड़के हो। अभी हम सबों का यह फर्ज बनता है कि हम तुम्हारी मदद करें। इसीलिए मैं आया हूँ।"

उनकी बातें सुनकर मुझे लगा, मैं उन्हें जितना बुरा समझता था, असल में उतने बुरे व्यक्ति वे नहीं थे। उनको धन्यवाद देते हुए मैंने कहा, “जब कभी जरुरत पड़ेगी, मैं आपके पास आऊँगा।”

करालीबाबू बैठे-बैठे इधर-उधर की बातें करने लगे। बातचीत के क्रम में मैंने उनसे कहा, “दादाजी के लोहे के सन्दूक में एक मजेदार चीज मिली है!”

करालीबाबू ने पूछा, “कौन-सी चीज?”

मैंने कहा, “चन्दन की लकड़ी के बक्से में कंकाल की एक खोपड़ी- ”

करालीबाबू की आँखें मानो चमक उठीं। वे जल्दी से बोल पड़े, “कंकाल की खोपड़ी?”

“हाँ, और एक पॉकेट-बुक।”

“वह बक्सा अभी कहाँ है?”

“लोहे के सन्दूक में ही।”

करालीबाबू ने उसी समय इस बात को दबाकर दूसरी बात छेड़ दी, लेकिन मैं खूब समझ रहा था कि वे अन्दर से बहुत उत्तेजित हो गये थे। कुछ देर के बाद वे चले गये।

उस रोज रात में अचानक मेरी नीन्द खुली। सुनायी पड़ा, मेरा कुत्ता बाघा जोर-जोर से भौंक रहा था। झल्लाकर मैंने दो-एक बार उसे डाँटा, लेकिन मेरी आवाज सुनकर उसका जोश और भी बढ़ गया- वह और भी जोर से भौंकने लगा।

इसके बाद किसी के पैरों की आहट सुनायी पड़ी। कोई तेज कदमों से छत से गुजर गया। आखिरकार दरवाजा खोलकर घर से बाहर आया। चारों तरफ देखा, कोई दिखायी नहीं पड़ा। लगा, मेरा भ्रम था। बाघा के गले से जंजीर खोलकर मैं फिर कमरे में आकर सो गया।

सुबह आँखें खुलते ही सुना, माँ जोर-जोर से चिल्ला रही थीं।

बाहर आकर पूछा, “क्या हुआ माँ?”

माँ बोलीं, “अरे कल रात चोर घुस आया था हमारे घर में!”

इसका मतलब रात जो मैंने आहट सुनी थी, वह भ्रम नहीं था।

माँ बोलीं, “देखो आकर, बड़े कमरे में लोहे के सन्दूक को खोलकर गया है।”

जाकर देखा, सही बात थी! लेकिन चोर कुछ खास नहीं ले जाया पाया था, सिर्फ चन्दन की लकड़ी वाला बक्सा गायब था।

मेरे मन में खटका-सा लगा! सन्दूक में इतनी सारी चीजों के रहते चोर सिर्फ वह बक्सा क्यों ले गया? यह भी याद आया कि सुबह इस बक्से की बात सुनकर ही करालीबाबू किस कदर उत्तेजित हो गये थे। इसका मतलब इस बक्से में कोई रहस्य छुपा है क्या? हो सकता है। वर्ना कंकाल की एक खोपड़ी को इतना सम्भालकर कोई लोहे के सन्दूक में क्यों रखने जायेगा भला?

माँ को बिना बताये भागकर बाहर गया। देखा, नाली में खोपड़ी तिरछी पड़ी हुई थी। ध्यान से उसकी जाँच करने के लिए मैंने उसे उठा लिया। खोपड़ी के एक तरफ गहरा काला रंग लगा हुआ था, लेकिन नाली का पानी लगने से बीच-बीच

में रंग हट गया था- और जहाँ-जहाँ रंग नहीं था, वहीं खुदे हुए कुछ अंक दिखायी पड़ रहे थे! उत्सुकतावश मैं खोपड़ी को फिर घर ले आया। साबुन लगाकर पानी से साफ करते ही खोपड़ी पर से सारा काला रंग हट गया। फिर मैंने आश्चर्य के साथ देखा कि खोपड़ी के उस हिस्से पर बहुत सारे अंक खुदे हुए थे।

अंक निम्न प्रकार से थे:

'27(6) 27(7) | 41(11) 34(3) 43 | 17(7) | 37(4) 23(7) | 48 43 44 | 37(7) 31.1 | 17(4) | 24 31.1 | 48(7) | 37/6 43 39 | 41(7) | 34 48 | 19 24 | 39 31.2 17 43 | 43/6 17(9) | 34(2) (3)49 36(7) | 2 28 | 19 24 | 37 43 | 39(5) {34 35} 34(7) 45 | 39(2)(11) 47(7) | 23 49 | 19 24 | 37 43 | 32(4) 36 | 37 {32 33} 43 | 5 48 17(7) | 36(4) 22(7) | 48(2) 32 | 49(2) 33| 24 41(4) 36 | 18(9) 34 36(7) | 37 43 | 43(2) {48 32}(2) | 41(3) 44(7) 19(2) |'

यक्ष का खजाना

इन विचित्र अंकों का मतलब क्या था? बहुत सोचा, लेकिन इनका सिर-पैर कुछ समझ नहीं पाया।

एकाएक दादाजी की पॉकेट-बुक की याद आयी। वह भी तो इस खोपड़ी के साथ थी, क्या उसमें इस रहस्य का कोई समुचित उत्तर नहीं होगा?

तुरन्त जाकर ताख से उस पॉकेट-बुक को उतारा। खोलकर देखा, उसके पन्ने शुरू से आखिरी तक लिखावट से भरे हुए थे। पहले पन्ने से पढ़ना शुरू किया, सोलह-सतरह पन्नों तक सामान्य बातें थीं। अचानक इसके बाद लिखा देखा:

'1920 साल, आश्विन माह।

आसाम से लौटते समय एक दिन हम लोग एक जंगल के बीच से गुजर रहे थे। सन्ध्या होने वाली थी, हम एक ऊँची पहाड़ी पर से उतर रहे थे। अचानक कुछ दूरी पर झाड़ियों में एक बड़ा-सा बाघ दिखायी पड़ा! वह घात लगाये हुए था- किसी पर झपटने के लिए! थोड़ी दूरी पर दिखायी पड़ा- एक सन्न्यासी रास्ते के किनारे पेड़ के नीचे सो रहे थे। बाघ उन्हीं पर घात लगाये था!

मैं जोर से चिल्ला पड़ा। मेरे साथ के कुलियों ने भी साथ दिया। सन्न्यासी की नीन्द खुल गयी और बाघ ने भी शोर सुनकर हमें देखा और फिर एक छलाँग मारकर झाड़ियों में ओझल हो गया।

जागने के बाद सन्न्यासी को मामला समझते देर न लगी। मेरे निकट आकर कृतज्ञ स्वर में बोले, "वत्स, तुम्हारे चलते आज मैं बाघ का निवाला बनने से बच गया!"

मैंने कहा, "महाराज, वन में भला इस तरह सोया जाता है?"

सन्न्यासी बोले, "वन ही तो मेरा घर-द्वार है वत्स!"

मैं बोला, "लेकिन अभी आपके प्राण चले जाते!"

सन्न्यासी बोले, "किन्तु नहीं गये वत्स। भगवान ने सही समय पर तुम लोगों को भेज दिया।"

पता चला, हम लोग जिस दिशा में जा रहे थे, सन्न्यासी को भी उधर ही जाना था। इसलिए सन्न्यासी को हमने साथ ले लिया।

सन्न्यासी दो दिन हमारे साथ रहे। यथासाध्य उनकी सेवा करने में मैंने कोई त्रुटि नहीं की। जिस दिन वे विदा हो रहे थे, उस दिन वे बोले, "देखो वत्स, तुम्हारी सेवा मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। तुमने मेरी प्राणरक्षा भी की है। जाने से पहले मैं तुम्हें एक रास्ता बता जाना चाहता हूँ।"

"किसका रास्ता?"

"यक्ष के खजाने का।"

मैंने उत्सुकता के साथ पूछा, "यक्ष का खजाना? यह कहाँ है महाराज?"

सन्न्यासी बोले, "खासी पहाड़ में।"

मैंने हताश होकर कहा, "किस जगह में है- यह मैं कैसे जानूँगा?"

सन्न्यासी बोले, "मैं ठिकाना बता देता हूँ। खासी पहाड़ के रूपनाथ गुफा का नाम सुने हो?"

मैंने कहा, "सुना हूँ। कहते हैं कि इस गुफा से होकर चीन देश में जाया जा सकता है और एक जमाने में चीन के एक सम्राट भारतवर्ष पर आक्रमण करने के लिए सेना लेकर इसी गुफा के रास्ते आये थे।"

सन्न्यासी बोले, "हाँ। इसी गुफा से पच्चीस कोस पश्चिम दिशा में जाने पर पुराने जमाने का एक मन्दिर मिलेगा। मन्दिर टूट गया है, कुछ दिनों बाद हो